राग सिधूडो

ओरो आव वाला आपण फूंदडी फरिए, फरिए ते फेर अपार।
फरतां फरतां जो फेर आवे, तो बांहोंडी म मूकसो आधार।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे वालाजी! मेरे पास आओ। हम फूंदड़ी (किकली) फिरें और खूब तेजी से घूमें। घूमते-घूमते यदि चक्कर आ जाए तो हाथ नहीं छोड़ना।

बांहोंडी मूकसो तो अडवडसूं, त्यारे हांसी करसे सहु साथ।
ते माटे बल करीने रमजो, फरतां न मूकवो हाथ।। २ ।।

यदि आप हाथ छोड़ दोगे तो मैं गिर पड़ूंगी और सब सखियां हंसी करेंगी। इस वास्ते ताकत लगाकर पकड़ना और हाथ न छोड़ना।

तमे तो वालाजी फूंदडी फरो छो, पण फरो छो आप अंग राखी।
ए रामत करतां मारा वालैया, फरिए पाछां अंग नाखी।। ३ ।।

हे वालाजी आप फूंदड़ी (किकली) फिरते हो। संकोच करके, इस रामत को खेलते समय अंग खींचकर पीछे रखो।

जुओ रे सखियो तमे आ जोड फरतां, रामत करे घणे बल।
इंद्रावतीनां तमे अंगडां जो जो, मारा वालाजीसूं फरे केवे बल।। ४ ।।

हे सखियो! तुम इस जोड़ी को घूमते हुए देखो। यह जोड़ी कितनी ताकत लगाकर रामत करती है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे अंग को विशेषकर देखो। मैं वालाजी के साथ कितने बल से घूमती हूं।

जुओ रे सखियो एम गातां फरतां, वालाजीने दऊं चुमन।
भंग न करूं फेर फूंदडी केरो, तो देजो स्याबासी सहु जन।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस प्रकार घूमते और गाते हुए वालाजी को चुम्बन भी दूंगी और खेल भी चलता रहेगा। ऐसा कर दिखाऊं तो मुझे शाबासी देना।

फरतां फूंदडी लीधी कंठ बांहोंडी, वली फरे छे तेमनां तेम।
दई चुमन ने थया जुजवा, वली फरे ते फरतां जेम।। ६ ।।

फूंदड़ी फिरते हुए (किकली खेलते समय) तुरन्त श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के गले में हाथ डाल देती हैं और चुम्बन देकर फिर से ज्यों की त्यों फूंदड़ी (किकली) फिरने लगती हैं।

एम अंग वालीने रमजो रे सखियो, तो कहूं तमने स्याबास।
एम लटके रंग लेजो वचमां, तो हूं तमारडी दास।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! यदि तुम भी अंग को मोड़कर खेलोगी, तो मैं तुमको शाबासी दूंगी। इस तरह से बीच में लटककर चुम्बन देकर आनन्द लोगी तो मैं तुम्हारी दासी कहलाऊंगी।

हूं तो सांचू कहूं रे सखियो, तमने तो कांईक मरजाद।
सांचू कहे अने प्रगट रमे, इंद्रावती न राखे लाज।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मैं सच कहती हूं कि तुम्हें खुलकर खेलने में शर्म आती है। मैं तो लाज-शर्म को छोड़कर खेलती हूं।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ४९० ।।

Nijanand App